आचार्य रत्नलाल 'विद्यानुग' स्मृति
अखिल भारतीय समीक्षा प्रतियोगिता के अंतर्गत
'शब्दनिष्ठा सम्मान-2020'

चयनित समीक्षाएँ

समीक्ष्य कहानी-संग्रह
डॉ॰ अखिलेश पालरिया : चुनिंदा कहानियाँ

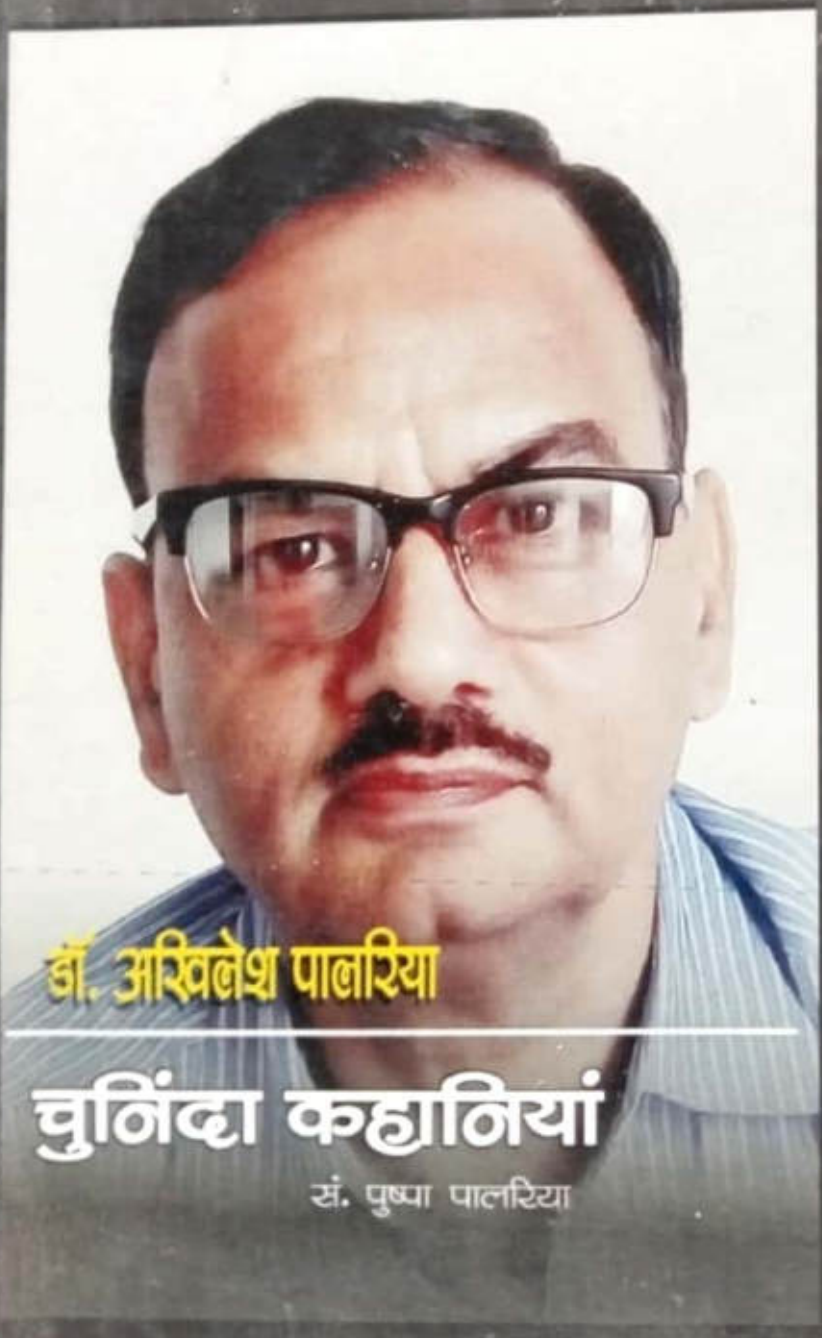

संपादक
पुष्पा पालरिया

Scanned by CamScanner

आचार्य रत्नलाल 'विद्यानुग' स्मृति
अखिल भारतीय समीक्षा प्रतियोगिता के अंतर्गत
'शब्दनिष्ठा सम्मान-2020'

चयनित समीक्षाएँ

समीक्ष्य कहानी-संग्रह
डॉ॰ अखिलेश पालरिया : चुनिंदा कहानियाँ

संपादक
पुष्पा पालरिया

हिंदी साहित्य निकेतन
16, साहित्य विहार, बिजनौर (उ॰प्र॰)

Scanned by CamScanner

ISBN 978-93-80916-34-7

प्रकाशक : हिंदी साहित्य निकेतन
16 साहित्य विहार
बिजनौर (उ०प्र०) 246701
फ़ोन : 01342-263232, 07838090732
ई-मेल : hindisahityaniketan@gmail.com
वेब साइट : www.hindisahityaniketan.com
टाइप सैटिंग : अनुभूति ग्राफ़िक्स, बिजनौर (उ०प्र०)
आवरण : के० रवींद्र, रायपुर
मुद्रक : आदर्श प्रिंटर्स, दिल्ली 32
संस्करण : प्रथम 2021
मूल्य : छह सौ रुपये

CHAYANIT SAMIKSHAAYEN (CRITICISM)
ETD. BY PUSHPA PALRIA
Rs. 600

Scanned by CamScanner

मानवीय मूल्यों का जीवंत दस्तावेज/ **डॉ॰ सुधा गुप्ता 'अमृता'** 193
सखी सुमरनी/ **डॉ॰ बजरंग सोनी** 197
मानव व्यवहार को ऊर्जा देनेवाली सार्थक कहानियाँ/ **रमेश मयंक** 207
यथार्थ और आदर्श के मध्य सेतु/ **संगीता सक्सेना** 212
मानवीय मूल्यों के सृजन और संरक्षण की साधना और
जीवनानुभवों का जीवंत दस्तावेज/
डॉ॰ मनीषा शर्मा 222
मात्र पुस्तक नहीं : अनुभव मंजूषा/ **संगीता माथुर** 225
संवेदनाओं के समंदर में अनुभूति की उफनती हुई लहरें/
राकेश माहेश्वरी 230
भावनाओं से भीगी कहानियाँ/ **बसंती पँवार** 233
सीप के मोती/ **डॉ॰ संध्या तिवारी** 236
कृतित्व के दर्पण में व्यक्तित्व का प्रतिरूप/ **इं॰ आशा शर्मा** 242
अंतर्मन के मनोभावों की प्रतिकृति हैं, हिंदीप्रेमी चिकित्सक की
कहानियाँ/ **डॉ॰ प्रीति प्रवीण खरे** 246
अपने समय व समाज की पड़ताल करती कहानियाँ/
महावीर रवांल्टा 250
मानवीय संबंधों की नई परिभाषा गढ़ती हैं डॉ॰ अखिलेश की
कहानियाँ/ **डॉ॰ प्रदीपकुमार शर्मा** 253
समसामयिक कहानियाँ/ **डॉ॰ भावना साँवलिया** 256
वैचारिक गांभीर्य और दार्शनिक वृत्ति की 'चुनिंदा कहानियाँ'/
डॉ॰ मंजु रुस्तगी 258
संवेदनाओं की भूमि पर भावुक आदर्शवाद का संसार/
डॉ॰ प्रभा मुजुमदार 261
संवेदनाओं के शब्दचित्र खींचता एक डॉक्टर/ **मनोज चारण** 264
रोशनी की कहानियाँ/ **कृष्णलता यादव** 266
मानवीय संवेदनाओं से युक्त संदेशपरक तथा जीवंत कहानियाँ/
डॉ॰ अनिता श्रीवास्तव 268
वर्तमान समय और समाज का आईना दिखाती पठनीय कहानियाँ/
शील कौशिक 270

Scanned by CamScanner

26

समसामयिक कहानियाँ

डॉ॰ भावना सॉवलिया

साहित्य और समाज दोनों का अभिन्न संबंध रहा है। साहित्यकार अपने साहित्य में युगीन परिस्थितियों का निर्माण करते हैं। साहित्य मानव जीवन के सुख-दुख का दर्पण है। जिससे युगीन परिस्थितियों का सहज परिचय साहित्य के माध्यम से मिल जाता है। साहित्य के क्षेत्र में कहानियों का विशिष्ट महत्त्व रहा है। कहानी ऐसी विशिष्ट विधा है, जिसमें व्यक्ति और समाज का कोई एक महत्त्वपूर्ण प्रसंग, घटना या अंश को स्थान दिया जाता है। जिसका प्रभाव व्यक्ति, समाज, राष्ट्र पर सहज होता है। आज के अति आधुनिक युग में, विज्ञान और तकनीकी के प्रचुर विकास में व्यक्ति के बुद्धि के विकास की तुलना में मानव हृदय पिछड़ गया है। मानव संवेदना का जितना विकास होना चाहिए वह नहीं हुआ है। परिणाम स्वरूप आज की युवा पीढ़ी में संवेदनाओं और भावनाओं का अभाव दिखाई देता है। स्वार्थी युवा पीढ़ी सिर्फ अपने सुख, सुविधा और विलासी जीवन के लिए जीवन मूल्यों की अवहेलना करके अंधी दौड़ लगा रही है, जो आज और आनेवाले समय के जीवन मूल्यों के लिए एक चुनौती है।

'डॉ॰ अखिलेश पालरिया : चुनिंदा कहानियाँ' का संपादन डॉ॰ अखिलेश जी की धर्मपत्नी श्रीमती पुष्पा पालरियाजी ने किया है। प्रस्तुत कहानी संग्रह में मानव जीवन और समाज से संबंधित 40 कहानियों को स्थान दिया गया है। इसमें पारिवारिक, सामाजिक, शैक्षिक समस्याएँ उभरकर सामने आती हैं। जैसे कि माता-पिता की दयनीयता, विधवा नारियों की करुण स्थिति, बाल मानस की जिज्ञासा, स्वास्थ्य प्रद शिक्षा का बालमानस पर प्रभाव, लड़कियों, कुरुपता और भिखारियों के प्रति समाज की हीन मानसिकता, दहेज की समस्या, सोशल मीडिया का प्रभाव, सकारात्मक और नकारात्मक सोच का प्रभाव, अँग्रेजी माध्यम का नशा आदि समस्याओं के साथ ही हिंदी भाषा का चिकित्सकों की मानवीयता, सर्वधर्म समभाव और भाईचारे की भावना, शिक्षा का महत्त्व, निस्वार्थ त्याग, समर्पण, आदि प्रासंगिक पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है। इतना ही नहीं इन

प्रासंगिक समस्याओं का निदान कर के उसका निवारण करने का प्रयास किया गया है।

डॉ॰ पालरिया की कहानियों में आज के विज्ञान के युग में रखड़ी मानव संवेदना और जीवन मूल्यों को स्थापित करने का प्रयास किया गया है। आज की संकुचित और स्वार्थी युवापीढ़ी अपने माता-पिता के प्रति अपना उत्तरदायित्व भूल बैठी है, जो आज के सुचारु समाज और समय की मुख्य चिंतनीय प्रासंगिक बात है। सभी कहानियों में लेखक की संवेदना और सूक्ष्म दृष्टिकोण का परिचय मिल जाता है। लेखक की भाषा सहज, सरल, कोमल, मधुर और पात्रानुसार है। सभी कहानियाँ व्यक्ति, समाज और राष्ट्र पर विशिष्ट प्रभाव डालकर आगे बढ़ती जाती हैं। प्रत्येक कहानी में लेखक की भावसृष्टि और मानवीय हृदय का परिचय अपने-आप मिल जाता है। संक्षेप में कहा जाए तो लेखक व्यक्ति और समाज का एक सच्चा प्रहरी बनकर आता है।

इस्कॉन मॉल, शॉप नं॰ 205
बिग बाजार के पास, नाना महुआ सर्कल
राजकोट (गुजरात) 360005
मो॰ 88498 42456

Scanned by CamScanner